हिंदी में पारंगत होते अमेरिकी

गिरिराज अग्रवाल

जयपुर में एआईआईएस हिंदी अध्ययन केंद्र पिछले पांच साल से चल रहा है। अमेरिकी विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी अपनी हिंदी को और बेहतर करने के लिए यहां पढ़ाई करने आते हैं। इसकी शुरुआत वाराणसी में हुई थी।

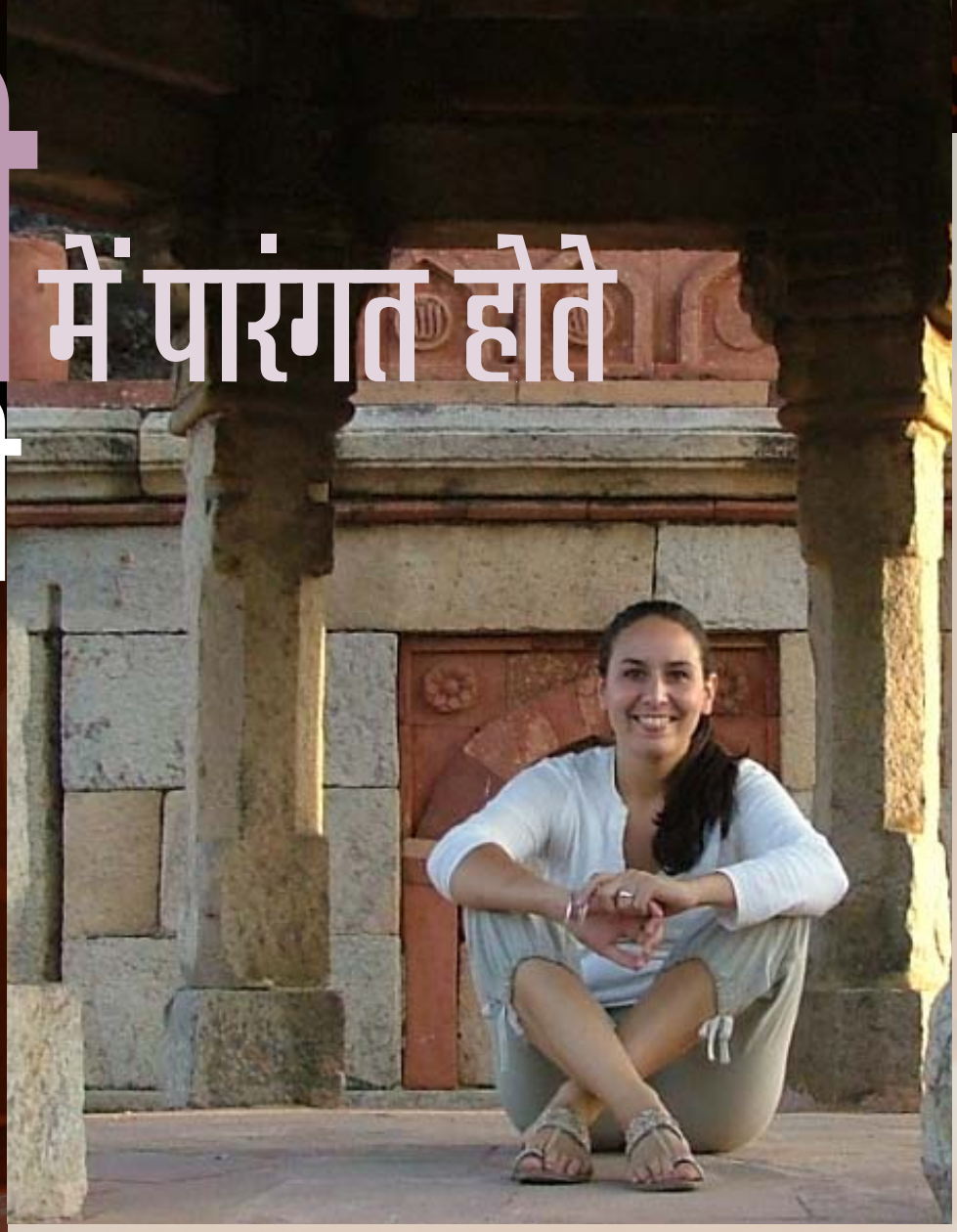

साभार: क्रिस्टिन कारवोस्की

बोस्टन के उपनगरीय इलाके में जन्मे ग्रेगरी गोल्डिंग को भारत आए एक साल भी नहीं हुआ है लेकिन फर्राटे से हिंदी बोलते हैं। उन्हें इस तरह हिंदी बोलते देख भारत में लोग अक्सर अचरज करते हैं। यह गोल्डिंग की लगभग पांच साल की मेहनत का नतीजा है। अमेरिका में अंग्रेजी और अमेरिकी साहित्य में अंडरग्रेजुएट डिग्री के दौरान उन्होंने विदेशी भाषा वर्ग में दो साल की पढ़ाई के लिए हिंदी को चुना और इससे प्यार कर बैठे। यही कारण है कि सितंबर 2006 में वह अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज (एआईआईएस) के जयपुर स्थित हिंदी अध्ययन केंद्र में आठ महीने के हिंदी पाठ्यक्रम का लाभ उठाने और अपनी हिंदी को प्रभावशाली बनाने के लिए भारत आ गए। गोल्डिंग कहते हैं, ''मैं ज्यादातर मूल हिंदीभाषियों के साथ हर तरह के विषय पर बिना किसी दिक्कत के सामान्य बातचीत कर सकता हूं।''

स्प्रिंगफ़ील्ड, मेसाच्यूसेट्स की क्रिस्टिन कारवोस्की एक और अमेरिकी विद्यार्थी हैं जो हिंदी सीखने के प्रति पूरी तरह गंभीर हैं। अपने हिंदी ज्ञान को चमकाने के लिए उन्होंने भी एआईआईएस के जयपुर केंद्र को चुना क्योंकि उन्हें अमेरिका में हिंदी का अभ्यास करने का मौका विश्वविद्यालय में सिर्फ सप्ताह में तीन दिन होने वाली हिंदी कक्षाओं में ही मिल पाता था। यह अमेरिकी छात्रा अपनी हिंदी शब्दावली बढ़ाने को लेकर इतनी उत्सुक है कि जयपुर में जिस आंटी जी के घर में रहती हैं उनसे लेकर रिक्शा वाले और दुकानदार तक, सभी से बोलचाल की हिंदी सीखने को तत्पर रहती हैं। सुश्री कारवोस्की पिछले चार साल से हिंदी सीख रही हैं लेकिन उन्हें लगता है कि धाराप्रवाह हिंदी बोलना अब भी चुनौती की बात है। हालांकि उन्हें हिंदी लिखने और पढ़ने में ज़्यादा मुश्किल नहीं होती है।

गोल्डिंग और सुश्री कारोवस्की उन हज़ारों अमेरिकी विद्यार्थियों में से हैं जो हर साल दुनिया के दूसरे देशों की संस्कृतियों को जानने-समझने और उन क्षेत्रों पर केंद्रित अपने अध्ययन के लिए उन देशों में

जाकर वहां की लोकप्रिय भाषाओं में धाराप्रवाह होने का प्रयास करते हैं। आठ महीने के हिंदी पाठ्यक्रम के लिए आने वाले विद्यार्थी वे होते हैं जो अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पहले से हिंदी सीख रहे होते हैं। एआईआईएस में अध्ययन के लिए चयनित छात्रों को अमेरिकी सरकार द्वारा फ़ेलोशिप दी जाती है।

हिंदी सीखने के पीछे अमेरिकी छात्रों का क्या उद्देश्य होता है? दिसंबर 2005 में कोलंबिया विश्वविद्यालय से दक्षिण एशियाई धर्म विषय लेकर ग्रेजुएशन करने वाली सुश्री कारवोस्की कहती हैं, ''मेरी शैक्षिक महत्वाकांक्षाओं के लिए हिंदी जानना विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है। मैं अपनी शिक्षा के इस पहलू को गंभीरता से लेती हूं। इसलिए एआईआईएस के जयपुर केंद्र में आने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।'' जबकि गोल्डिंग ने जब न्यू यॉर्क यूनिवर्सिटी से अंडरग्रेजुएट शिक्षा के दौरान भाषा अनिवार्यता के बतौर हिंदी को चुना तो उसी समय उनकी इसमें दिलचस्पी बढ़ गई। वह कहते हैं, ''मैंने यूनिवर्सिटी के बाहर भी काम करने के दौरान अपने बचे समय में हिंदी सीखना शुरू किया।'' उनका इरादा अमेरिका के किसी विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाने का है। गोल्डिंग अमेरिका लौटकर दक्षिण एशिया मास्टर्स डिग्री प्रोग्राम की पढ़ाई करने का मन बना रहे हैं।

हिंदी सीखने से क्या लाभ हुआ है? इस सवाल के जवाब में सुश्री कारवोस्की कहती हैं, ''लोगों से सीधे बातचीत करने से उन्हें लगता है कि आप उनके जीवन और संस्कृति में रुचि ले रहे हैं और इस बात को कौन नहीं सराहेगा? इसके चलते मैं बहुत तरह के लोगों से दोस्ती कर पाई हूं और यह जान पाई हूं कि उत्तर भारत में कितनी सांस्कृतिक विविधता है।'' गोल्डिंग को लगता है कि हिंदी के कारण वह जयपुर में ज़्यादा स्वतंत्र जीवन जी पा रहे हैं। वह कहते हैं, ''यदि मुझे हिंदी नहीं आती तो उत्तर भारत के भाषाई और सांस्कृतिक संसार तक मेरी पहुंच नहीं बन पाती।''

सुश्री कारवोस्की बताती हैं कि हिंदी सीखने के दौरान उन्हें सबसे ज़्यादा सफलता तब मिली जब वह और उनके साथी जयपुर के पुराने इलाकों में गए और लोगों से मिलेजुले और हिंदी में बातचीत की। ''हमें चूड़िया बेचने वालों ओर मंदिरों में पूजा करने वाले लोगों के जीवन, उनकी मुश्किलें और आनंद के क्षणों के बारे में जानकारी एकत्र करने को कहा गया। लोगों ने अपने बारे में खुशी-खुशी जानकारी दी लेकिन यह भी पूछा कि हम हिंदी क्यों सीख रहे हैं।''

जयपुर स्थित एआईआईएस हिंदी अध्ययन केंद्र के समन्वयक डॉ. अच्युता नंद सिंह बताते हैं कि आठ महीने का हिंदी पाठ्यक्रम चार चरणों में संपन्न होता है। शुरुआती चरण में विद्यार्थियों के मूल भाषा ज्ञान को बढ़ाने पर ज़ोर दिया जाता है। इसमें व्याकरण की जानकारी, शब्द भंडार बढ़ाने का प्रयास और हिंदी पढ़ने, लिखने, बोलने और सुनने के बारे में मूल बारीकियों का ध्यान रखने के बारे में जानकारी दी जाती है। वह कहते हैं, ''बाद के चरणों में छात्र हिंदी सीखने में आने वाली मुश्किलों के अनुसार शिक्षकों के साथ मिलकर अपने सीखने की शैली और गति खुद तय करते हैं। ज़्यादा ज़ोर प्रोजेक्ट वर्क और सामुदायिक भागीदारी पर दिया जाता है जिससे कि विद्यार्थी उन लोगों से रूबरू हों जिनकी रोजमर्रा की बोलचाल की भाषा हिंदी है।''

हिंदी सीखने के क्रम में विद्यार्थी कई किस्म की हिंदी पुस्तकें पढ़ते हैं। गोल्डिंग को कमलेश्वर जैसे साहित्यकारों का पिछले 50 साल का आधुनिक हिंदी कथा साहित्य पसंद आता है। उन्हें कमलेश्वर का उपन्यास *कितने पाकिस्तान* बहुत पसंद आया। सुश्री कारवोस्की भारतीय धर्मों के बारे में बहुत सी पुस्तकें पढ़ रही हैं क्योंकि वह इस विषय का अध्ययन गहराई से करना चाहती हैं। उन्होंने पिछले दिनों द्वारका प्रसाद शर्मा की *हिंदू तीर्थ* पुस्तक पढ़ी है।

दोनों ही विद्यार्थियों को लगता है कि मेजबान परिवारों के साथ रहना अच्छा अनुभव रहा है और इससे हिंदी का अभ्यास करने में लाभ हुआ है। सुश्री कारोवस्की ने सुबह के नाश्ते और रात के खाने के समय मेजबान परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत कर अपनी हिंदी सुधारने का प्रयास किया। उन्होंने हिंदी में कौन बनेगा करोड़पति कार्यक्रम भी देखा।

दोनों ही विद्यार्थियों को बॉलीवुड फिल्मों ने भी अपनी ओर आकर्षित किया है। गोल्डिंग *ओमकारा* देख चुके हैं तो सुश्री कारोवस्की ने *गुरु* और *ब्लैक फ्राइडे* देखी हैं।

जयपुर में एआईआईएस हिंदी अध्ययन केंद्र पिछले पांच साल से चल रहा है। हिंदी अध्ययन की शुरुआत एआईआईएस ने वाराणसी में लगभग 40 साल पहले की थी। इसके बाद यह केंद्र उदयपुर से संचालित हुआ और अब मई 2002 से जयपुर में चल रहा है। पिछले 18 साल से इस अध्ययन केंद्र से जुड़े सिंह बताते हैं कि हिंदी सीखने के दौरान विद्यार्थियों को सबसे ज़्यादा दिक्कत हिंदी बोलने और सुनने में आती है। हिंदी पढ़ने और लिखने में वे अपेक्षाकृत तेज़ी से आगे बढ़ते हैं।

हिंदी सीखने में क्या दिक्कतें आती हैं? गोल्डिंग कहते हैं, ''उत्तर भारत में, खासकर शैक्षिक संस्थानों में लोग हिंदी बोलते समय अंग्रेजी भी बोलते हैं जिससे धाराप्रवाह हिंदी बोलने का अभ्यास करना मुश्किल हो जाता है।''

साभार: एआईआईएस, हिंदी भाषा कार्यक्रम, जयपुर

हिंदी भाषा कार्यक्रम के विद्यार्थी (बाएं से दाएं) ग्रेगरी गोल्डिंग, क्रिस्टिन एच. कारवोस्की और कैथलीन कॉमन्स लोकप्रिय हिंदी गीत मेरा जूता है जापानी *गाते हुए।*

बाएं: क्रिस्टिन कारवोस्की दिल्ली स्थित हुमायूं के मकबरे में। नीचे: विद्यार्थी और शिक्षक अजमेर में ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में चद्दर चढ़ाने के लिए जाते हुए। खड़े हुए लोगों में बाएं से दूसरे हैं हिंदी भाषा कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अच्युता नंद सिंह।

साभार: एआईआईएस, हिंदी भाषा कार्यक्रम, जयपुर